कविता

स्वागत तुम्हारा है! नववर्ष

कंप-कंपाती ठंड में देखो

कैसा भ्रम बनाया है

पश्चिम दीवानों ने कैसा

यह न्यू ईयर मनाया है।

भूले ऐतिहासिक संवत को

ईस्वी में है नाच रहे ,

बेगानी संस्कृति पुस्तक के

पृष्ठों को ये बाँच रहे।

सभी प्राणी ठिठुर रहे हैं

पशु-पक्षी और वृक्ष-धरा

सूरज भी मध्यम पड़ कर

बादलों में छिपा रहा।

Scanned with OKEN Scanner

रंग विहीन है बाग-बगीचे

हरियाली भी उदास है

निश्चेत है कीट-पतंगे

नहीं जीने की आश है।

दुबक पड़ी प्रकृति सारी

कोहरे के संत्रास में

आयेगा उल्लासित फागुन

बैठी है विश्वास में।

ठूँठ बने जो वृक्ष सभी

बाट जोह रहे नवरस की

पत्र विहीन शाखाएं देखती

रात्रि आयेगी जब यश की।

दिग्भ्रमित होकर कब तक हम

न्यू ईयर मनाते जायेंगे

घर-घर में मिलकर सारे कब

Scanned with OKEN Scanner

अपना वर्ष मनायेंगे।

धरा बनेगी दुल्हन जब

फसलें खेतों में नाचेंगी

नये वर्ष पर सारी दुनिया

भारत की खुशियां बाँचेगी।

पूर्ण होगी परीक्षा बच्चों की

और खाते महाजन के

नव उल्लास नव उत्साह में जब

खिलेंगे चेहरे जन-जन के।

उचक-उचक कर पुष्प सभी जब

खुशबू से महकायेंगे

स्वागत तुम्हारा हे! नव वर्ष

यह झूम-झूमकर गायेंगे।

तब कृष लता भी लिपट-लिपट

कोने से शरमायेगी

Scanned with OKEN Scanner

धीमे-धीमे दबे पाँव जब

चैत्र-प्रतिपदा आयेगी।

प्रकृति का रंग निखरेगा तब

चीं-चीं चिड़िया चहकेंगी

कोयल की कूँ-कूँ से जब

उपवन की डाली महकेंगी।

महापुरुषों की जयंती मनाने

ले तिथि नववर्ष आयेगा

बच्चें-महिला-वृद्धों को जब

नव संवत्सर भायेगा।

ढ़ोते रहोगे कब तक तुम

अंग्रेजों की इस कल्चर को

आह्वान करो हर मानव को

खट -खटाओ हर दर को।

अपनी समृद्ध संस्कृति की

Scanned with OKEN Scanner

ध्वजा को हम फहरायेंगे

न्यू ईयर को छोड़कर

नव संवत्सर अपनायेंगे।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर

'वत्स' गीत प्रेम के गायेंगे

भारत के सच्चे वासी हम

अपना नव वर्ष मनायेंगे।

डॉ. उमेश प्रताप वत्स

Scanned with OKEN Scanner

बढ़े चलें...

दीप से दीप जलाकर हम सब, तिमिर हटाकर बढ़े चलें।
जटिल विडम्बना कितना रोके, पार करें और बढ़े चलें।
सरल नहीं है लक्ष्य अपना, कंटक मार्ग पर चलना,
आगे-आगे बढ़ते जाये और, बाती के जैसे जलना,
लक्ष्य पूर्ण हो जाएगा, एक-एक पग बढ़े चले
जटिल विडम्बना कितना रोके, पार करें और बढ़े चलें।
गिरिजन निर्धन सबको लेकर, स्वप्न को पंख लगाना है
जाति-पंथ के भेद भु लाकर, सबको साथ में लाना है
आदर्शों के पथ पर चलकर, व्यक्ति समाज को गढ़े चले।
जटिल विडम्बना कितना रोके, पार करें और बढ़े चलें।
घात लगाकर बैठे द्रोही, परवाह उनकी करनी क्यों?
घर के भेदी देश के दुश्मन, जितने भी हो डरना क्यों?
सात्विक जन को साथ में लेकर, शनैः-शनैः हम बढे चलें।
जटिल विडम्बना कितना रोके, पार करें और बढ़े चलें।
समृद्ध इतिहास की शक्ति लेकर, हिन्दु गौरव गान करें।
शिवा-प्रताप से महापुरुषों का, हृदय से सम्मान करें।
सावरकर से चिन्तक बनकर, जागृत होकर बढ़े चलें।
जटिल विडम्बना कितना रोके, पार करें और बढ़े चलें।
मान-सम्मान से ऊपर उठकर, सजग प्रहरी बनना है।
पद लोलुपता रोक न पायें, निस्वार्थ हो बढ़ना हैं।
एक ही लक्ष्य राष्ट्र उत्थान का, लेकर हम सब बढ़े चलें।
जटिल विडम्बना कितना रोके, पार करें और बढ़े चलें।

डॉ. उमेश प्रताप वत्स

Scanned with OKEN Scanner